अमरकांत के उपन्यास 'कटीली राह के फूल' में अध्यापक वर्ग की विसंगतिया

डॉ. सोमवीर

हिन्दी विभाग
जिला–महेन्द्रगढ

सार

अमरकांत के उपन्यास 'कटीली राह के फूल' में शिक्षक वर्ग की विभिन्न विसंगतियों को चित्रित किया गया है। अध्यापक राष्ट्र का निर्माता होता है और यदि उसी में अनेक विसंगतियाँ हों, तो राष्ट्र का भविष्य क्या होगा, इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। अध्यापक भावी राष्ट्र का निर्माता होता है। अन्य पदों की तुलना एक अध्यापक से अपेक्षाकृत कई गुणों की आकांक्षा की जाती है। अध्यापन कुशल, प्रवीण, विनम्र, सहृदय, अति संवेदनशील, सहिष्णु, निष्पक्ष, सहयोगी, विशेषज्ञ आदि होना चाहिए। ऐसा हर गुण एक आदर्श अध्यापक में समावेशी होना चाहिए। अध्यापक का चरित्र अनुकरणीय होता है। प्राचीनकाल में कई शिक्षकों ने अपने आदर्श/कर्तव्य निभाए हैं। लेकिन आधुनिक शिक्षक में उपर्युक्त गुणों का पतन होता जा रहा है। आज का अध्यापक इन चुनौतियों का सामना करने में असमर्थ है। इन सद्गुणों के अभाव में अध्यापक समाज में अपनी भूमिका का निर्वाह सही ढंग से नहीं कर पा रहा है।

परिचय

सुप्रसिद्ध उपन्यासकार अमरकांत का उपन्यास 'कटीली राह के फूल' शिक्षा जगत की यथा तथ्य स्थितियों पर आधारित है। अमरकांत जी ने इस उपन्यास में आज के समय में उत्पन्न शिक्षा जगत की विसंगतियों को कथा वस्तु का आधार बनाया है। इस औपन्यासिक रचना में तीन प्रकार की विसंगतियां देखने को मिलती हैं यथा :–

(क) विद्यार्थी वर्ग की विसंगतियां
(ख) अध्यापक वर्ग की विसंगतियां
(ग) शिक्षाधाम प्रबन्धन की विसंगतियां

इस शोधपत्र में अमरकांत के उपन्यास 'कटीली राह के फूल' में शिक्षा जगत की अध्यापक वर्ग की विसंगतियों को जानने की चेष्टा की गयी है। अमरकांत का व्यक्तित्व बहुमुखी और बहुआयामी रहा है। इनका सारा जीवन सक्रियता एवं संघर्ष का रहा है। उनका आरम्भिक जीवन भले ही अत्यंत संघर्षपूर्ण रहा हो परन्तु उन्होंने धैर्य और साहस का परिचय देते हुए अपने जीवन को हर क्षण साहसपूर्ण व्यतीत किया। इनका साहित्य भारतीय जनमानस की आंतरिक व बाह्य भावनाओं और परिवेश का सुन्दर चित्रण करता है। समाज, शासन, धर्म, संस्कृति, व्यवस्था में विसंगतियों को उजागर करना, आतंक और आतताइयों की पहचान करवाना, मौन को वाणी देना इनके साहित्य सृजन का लक्ष्य रहा है। समानता की भावनाओं को मन में पालना और आतताइयों का नाश करना इनके जीवन का ध्येय रहा है। अमरकांत जी के साहित्य में भाषा और संवादों में स्वाभाविकता है। अमरकांत जी के उपन्यास यथार्थ के निकट हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों का केन्द्र बिन्दु निम्न–मध्य वर्ग को बनाया है। निम्न मध्यम वर्गीय संवेदना को उन्होंने पूरी मनोवैज्ञानिकता से चित्रित किया है । शोषित पात्रों और उनके समस्त परिवेश को उन्होंने अपने साहित्य में मूर्तिमान किया है। इसमें आर्थिक विपन्नता से जूझता वर्ग, नारी का दोहरा शोषण, शोषित व्यक्ति का चरित्र, निरीहता और ओछापन, समाज की विभिन्न विद्रूपताओं का पूर्ण चित्रण है। 'कटीली राह के फूल' उपन्यास को शिक्षा जगत की विसंगतियों का प्रमाणिक दस्तावेज कहा जा सकता है। अध्यापको से जुड़ी विसंगतियां निम्नलिखित हैं :–

योग्य अध्यापको की कमी

आज शिक्षा के क्षेत्र में योग्य अध्यापक सिफारिशों की वजह से नहीं आ रहे हैं। अयोग्य अध्यापक छात्रों के हितों से खिलवाड़ करता है, क्योंकि उसकी विषय पर पकड़ नहीं होती है। इसके अतिरिक्त शिक्षक का एक अमूल्य गुण उसकी ममता अर्थात् छात्रों के साथ सहानुभूति लगभग प्रायः समाप्त सी हो गई। अकसर कई शिक्षक बच्चों को कठोर दण्ड देते हैं, जिससे उनके मानसिक व अन्तर्निहित क्षमताओं का संपूर्ण विकास नहीं हो पाता। शिक्षकों के ऐसे न्यायालय के निर्देशानुसार अब अध्यापक बच्चों को मारना तो दूर उसे डांट या अपशब्द भी नहीं कह सकता है।

प्रतिष्ठित कथाकार अमरकांत आधुनिक शिक्षकों एवम् छात्रों के भविष्य के प्रति चितिंत है। ऐसे आधुनिक द्रोणाचार्यों का उल्लेख लेखक ने अपने उपन्यास 'कटीली राह के फूल' में किया है। शिक्षक की कर्महीनता का वर्णन करता हुआ

धीरेन्द्र कहता है –''मेरा मित्र बता रहा था कि उसकी कलास में बड़ा मजा आता है क्योंकि वे कोर्स की किताबें बहुत कम पढ़ाते हैं और अक्सर हिन्दी के कवियों को गालियां देकर या अपनी अंग्रेजी की कविताएं सुनाकर समय समाप्त कर देते हैं।''

आधुनिक शिक्षक वर्ग ने अपने कर्म से मुख मोड़ लिया, वह अपने कर्तव्यों को भूल गया है।

प्रश्न पत्र आउट करवाना :

आधुनिक मनुष्य लोभी प्रवृत्ति का होता जा रहा है। अपने स्वार्थों की साधना में वह अन्य लोगों की उपेक्षा करता है। स्वार्थ में अंधा मनुष्य उचित–अनुचित का भेद नहीं रख पाता। छात्रों से विशेष लगाव होने के कारण अध्यापक उन्हें आगामी प्रश्न पत्रों के विषय में पहले से ही बता देता है। ऐसी प्रवृत्ति आज हर जगह देखी जा सकती है। इस प्रकार की नैतिकता का उल्लंघन 'कटीली राह के फूल' उपन्यास में भी दिखाई देती हैं।

'कटीली राह के फूल' उपन्यास में भी अनुचित साधनो से उतीर्ण होने के बारे में बताया है जो निम्न प्रकार है ''फिर पढने–लिखने पर भी इसका असर पड़ा। नाइन्थ क्लास तक तो मास्टर लोग ही पर्चे आउट कर देते थे। हम कमीज और पैंट पर सवाल के जवाब लिख कर ले जाते। हाई स्कूल में भी इनविजीलेटर कृपालु थे। सो नकल की सुविधा मिल गई।''

अहं भावना :

अध्यात्म वाद में अहं को विनाश का सूचक माना जाता है। मनुष्य जीवन में अहं एक ऐसा भाव है जो व्यक्ति को विनाश/पतन के रास्ते पर ले जाता है। बुद्धिमान व्यक्ति को जब अहं हो जाता है तो तभी से उसका पतन होना निश्चित हो जाता है। अहं का भाव मनुष्य के मन में आने से अन्य प्राणियों या मनुष्य को वह तुच्छ समझने लगता है और उनका शोषण करना, अन्य पर अत्याचार करना शुरू कर देता है। यह ऐसा भाव है जो मनुष्य के अन्य गुणों पर हावी हो जाता है। इसके हावी होने पर मनुष्य को उचित, अनुचित के भेद को भूल जाता है।

शिक्षा के मुख्य स्तंभ को यदि अहं की दीमक लग जाएगी तो वह शिक्षा रूपी स्तंभ कभी भी खड़ा नहीं हो सकता। किसी भी राष्ट्र के मुख्य स्तम्भों में मुख्य स्तम्भ शिक्षण व शिक्षार्थी होता है और यदि इन दोनों में से किसी एक को भी अहं पैदा हो जाता है तो राष्ट्र का भविष्य अंधकारमय ही होगा।

उपन्यास में अनूप कुमार अपने खेल अध्यापक के बारे में बताते हैं कि किस प्रकार उनका खेल में पारंगत अध्यापक अपने अहं के कारण खेल के मैदान में अपनी किर–किरी करवा लेता है। किस प्रकार वह अहं के मद में अपना और अपने छात्रों का भविष्य अंधकार में झोंक देता है। इसलिए छात्र व अध्यापक वर्ग को अहं के भाव से हमेशा मुक्त रहना चाहिए।

अमरकांत जी ने अपने उपन्यास 'कटीली राह के फूल' के पात्र अनूप कुमार के माध्यम से खेल अध्यापक के बारे में बताते हैं कि ''चूंकि वह कप्तान था, इसलिए सभी उसको ही पास देते और वह अपने अहंकार में, जिसकी पुष्टि स्थानीय रद्दी टीमों के खिलाफ मैच खेलकर हुई थी, फैरी करने लगता। एक बार तो गोल के पास पहुँचकर उसने अवसर खो दिया।''

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि अध्यापक राष्ट्र का निर्माता होता है और यदि उसी में अनेक विसंगतियाँ हों तो राष्ट्र का भविष्य क्या होगा। इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। कुछ अध्यापक वर्ग या देश के वासी अपने तुच्छ स्वार्थपूर्ति के ध्येय से किया गया कर्म देश व छात्रों के भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। अध्यापक वर्ग को अपने अध्ययन कार्य के प्रति वफादार होना चाहिए। तभी शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है। विद्यार्थी वर्ग भी मार्ग दर्शन के अभाव में जीवन के लक्ष्य से भटक जाते हैं। जिस प्रकार गाड़ी के दोनों पहिएं आपस में संतुलन बनाकर साथ चलते हुए वे लक्ष्य को प्राप्त कर लेते हैं, उसी प्रकार से अध्यापक व छात्र के आपसे संतुलन बनाकर चलना ही श्रेयश्कर होगा।

अध्यापक व छात्रवर्ग में अहं का समावेश राष्ट्र के विनाश का कारण बन सकता है। अध्यापक जीवन में अहं भावनाओं का समावेश ही नहीं होने देना चाहिए।

सन्दर्भ–ग्रंथ सूची

1. डॉ. आत्माराम **इक्कीसवीं सदी में शिक्षा** अखिल भारती, 3014 चर्खेवालान, दिल्ली–110006
2. गोपाल कृष्ण अग्रवाल **मानव समाज**, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. गोपाल कृष्ण अग्रवाल **सामाजिक विघटन,** लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 1972
4. जी.आर. मदान **समाज शास्त्र के सिद्धान्त**

सरस्वती सदन, 7 यू.ए. नगर,
दिल्ली–1969

5. डॉ. डी.एल. शर्मा **शिक्षा तथा भारतीय समाज**
सूर्य पब्लिकेशन c/o आर लाल बुक डिपो
सप्तम संशोधित संस्करण–2007
(निकट गवर्नमेण्ट कॉलेज),
मेरठ–250001

6. एन.आर.स्वरूप सक्सेना, **उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा**
शिखा चतुर्वेदी सूर्य पब्लिकेशन, नवीन संस्करण 2006
निकट गवर्नमेन्ट इण्टर कॉलेज
मेरठ–250001

7. एम.एम. लबानिया, **सैद्धान्तिक समाज शास्त्र**
शशि के. जैन रिसर्च पब्लिकेशन्स, त्रिपोलिया बाजार
जयपुर–2

8. बी.डी. गुप्ता **ग्रामीण समाज शास्त्र**
सीता प्रकाशन, हाथरस, 1980

9. रवीन्द्रनाथ मुकर्जी **समाज शास्त्र के सिद्धान्त**
सरस्वती सदन, मसूरी, प्रथम संस्करण
1965

10. लाल एवं पलोड़ **उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा**
विनय रखेजा, c/o आर लाल बुक डिपो
निकट गवर्नमेण्ट कॉलेज, मेरठ–250001 संस्करण–2007

11. विद्याभूषण एवं **समाज शास्त्र के सिद्धान्त**
आर. सचदेवा किताब महल, दिल्ली–1990

12. शम्भूनाथ त्रिपाठी **समाज शास्त्र विश्वकोष**
किताब घर, कानपुर, संस्करण–1980

13. डॉ. एस.के. मंगल **शिक्षण एवं अधिकगम का मनोविज्ञान**
टन्डन पब्लिकेशन, बुक मार्किट,
लुधियाना–141008

14. सरला दूबे **सामाजिक विघटन**
विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर,
दिल्ली। नवम संस्करण–2000

15. डॉ. सुरेश भटनागर, **शिक्षण–अधिगम का मनोविज्ञान**
डॉ. सुरेश जोशी सूर्य पब्लिकेशन, निकट गवर्नमेण्ट
कॉलेज, मेरठ–250001,
संस्करण–2008